राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान

(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय के अधीन, भारत सरकार)
मानित विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)

भारत सरकार द्वारा संस्कृत आयोग (1956-1957) के अनुशंसा के आधार पर संस्कृत के विकास और प्रचार-प्रसार हेतु तथा संस्कृत से सम्बद्ध केन्द्र सरकार की नीतियों एवं कार्यक्रमों के क्रियान्वयन के उद्देश्य से 15 अक्टूबर 1970 को एक स्वायत्त संगठन के रूप में राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (रा.सं.सं.) की स्थापना की गयी थी। वर्तमान में इस मानित विश्वविद्यालय के बारह परिसर देश के ग्यारह प्रदेशों में कार्यरत हैं। उनमें मध्यप्रदेश की राजधानी राजा भोज की नगरी भोपाल में शिक्षासत्र 2002-2003 से भोपाल परिसर सञ्चालित है। परिसरीय **ज्योतिष विभाग** भी शास्त्रशिक्षण एवं अनुसन्धाताओं के मार्गनिर्देशन द्वारा अनुसन्धान कार्यों में अपना बहुमूल्य योगदान देता आ रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप विगत 7 वर्षों से भोपाल के अक्षांश एवं देशान्तर पर आधारित **श्रीभोजराज पञ्चाङ्ग** तथा **ज्योतिष मीमांसा वार्षिक शोध पत्रिका** का भी प्रकाशन हो रहा है। साथ ही अनुसन्धान कार्यों एवं प्रायोगिकज्ञान को बढ़ावा देने के निमित्त **ज्योतिषप्रयोगशाला** की भी स्थापना परिसर में की गई है। इसके अतिरिक्त **ज्योतिष परिचय पाठ्यक्रम एवं वास्तु परिचय पाठ्यक्रम** के साथ ही **एक वर्षीय वास्तुशास्त्र डिप्लोमा** का निरन्तर संचालन सामाजिक दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट कार्य सम्पादित कर आम लोगों को भी लाभान्वित कराने का प्रयास किया जा रहा है।

महर्षि पतञ्जलि संस्कृत संस्थान, भोपाल

मध्यप्रदेश शासन

मध्यप्रदेश राज्य में संस्कृत तथा उसके साहित्य के अध्यापन क्षेत्र में अनुसंधान और व्यापक अध्ययन को अग्रसर करने के प्रयोजन हेतु और स्कूल स्तर पर संस्कृत शिक्षा को विनियमित करने के लिये महर्षि पतञ्जलि संस्कृत संस्थान (म.प.सं.सं.) की स्थापना की गयी। जिसके प्रमुख ग्यारह उद्देश्य हैं। इन उद्देश्यों में संस्कृत भाषा और साहित्य में सन्निहित ज्ञान, विज्ञता और दृष्टिशक्ति के प्रसारार्थ ज्योतिष, वास्तु, कर्मकाण्ड आदि शास्त्रों के अध्ययन और गवेषणा की सुविधाएं उपलब्ध कराना और एतदर्थ, म.प.सं.सं. को एक उत्कृष्ट केंद्र के रूप में विकसित करना तथा उक्त विषयों में रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम का संचालन करना भी है।

इसी क्रम में म.प.सं सं ने रा.सं.सं. भोपाल परिसर के साथ मिलकर **ज्योतिष-शास्त्र की वैज्ञानिकता और वर्त्तमान समय में इसकी प्रासंगिकता** इस विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय ज्योतिष कार्यशाला के आयोजन का निर्णय लिया है।

राष्ट्रिय-ज्योतिष-कार्यशाला

अध्ययन की वह शाखा जिसमें – क.) प्रयोग व सिद्धान्त दो पक्ष हों, ख.) प्रयोग के समय निश्चित परिस्थिति में नियत परिणाम आयें, यानि अपवाद नहीं के बराबर हों, ग.) प्रथम पक्ष अर्थात् प्रयोग के आधार पर द्वितीय पक्ष यानि सिद्धान्त का निर्माण हो, घ.) जो सामयिक हो अर्थात् जिसमें सतत अन्वेषण, अन्वीक्षण और प्रयोग द्वारा समयानुकूल परिवर्तन की सम्भावना बनी रहे, विज्ञान कहलाती है।

आइए, विचार करते हैं कि ज्योतिष इन मानकों पर खरा उतरता है कि नहीं; जिसके लिये यह जानना जरूरी है कि ज्योतिष किसे कहते हैं? ज्योतिष अध्ययन की वह शाखा, जो आकाशीय पिण्डों यानि ग्रह, नक्षत्र आदि के गति, स्थिति, स्वरूप और प्रभाव का विचार करती है।

अध्ययन-क्षेत्र के आधार पर ज्योतिष त्रिस्कन्धात्मक अर्थात् तीन भागों में विभाजित है –

१. **गणित/सिद्धान्त (Astronomy)** - जिसमें गति-स्थिति, ग्रहण-सङ्क्रान्ति आदि घटना के काल का निर्धारण और मास-तिथि-वर्ष-युग आदि काल का ज्ञान किया जाता है।

२. **फलित/होरा(Astrology)** – जिसमें ग्रह-नक्षत्रों के व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। जिसका आधार जन्म के समय की आकाशीय स्थिति का नक्शा अर्थात् जन्म कुण्डली और अन्य सूक्ष्म ज्ञान हेतु अन्य नवांश आदि कुण्डलियां हैं।

३. **संहिता/मेदिनी (Mundane Astrology)** – जिसमें ग्रह, नक्षत्र, धूमकेतु आदि के संचरण, वर्ण, आकृति और युति आदि के आधार पर और अन्य प्राकृतिक घटनाओं यथा परिवेष, ग्रहण, दिग्दाह आदि के आधार पर समाज अर्थात् ग्राम-नगर-राज्य-देश आदि पर पडने वाले वृष्टि-कृषि-वस्तुमूल्यपरिवर्तन-सत्तापरिवर्तन-गृहयुद्ध-भूकम्प आदि प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।

इसमे निश्चित तौर पर, ज्योतिष के प्रथम अर्थात् गणित के वैज्ञानिक पक्ष पर किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता है। प्रश्न अन्य दो भागों की वैज्ञानिकता पर उठाए जाते हैं। किन्तु, ये दोनो भी पूर्णतया वैज्ञानिक है क्योंकि ये उपरिलिखित मानकों पर खरे उतरते हैं। इनका अस्तित्त्व ही प्रत्यक्षसिद्ध आकाशीय स्थिति से है। इनकी प्रयोगशाला यह संसार ही है जिसमे प्रयोग के तौर पर प्रतिक्षण नियत आकाशीय स्थिति में हज़ारों जीव जन्म लेते हैं। इस जन्मकालीन नियत आकाशीय स्थिति का अङ्कन उसके मन-मस्तिष्क-शरीर पर हो जाता है, जिसका परिणाम उसकी शिक्षा, अभिरुचि, आजीविका, विवाह, सन्तान, यश-अपयश,रोग, दुर्घटना, मृत्यु आदि के रूप में हमारे सामने आता है, जिनका स्वरूप-काल-निर्धारण ज्योतिषीय सिद्धान्तों और गणना के अनुरूप ही होता है, इतर नहीं। सहस्रों वर्षो पूर्व निर्धारित ये सिद्धान्त, ऋषियों द्वारा अपनी अतुल्य मेधा व प्रतिभा के बल पर जीवन-रूपी प्रयोगशाला में नित्य घटित प्रयोगों के सतत परीक्षण की कसौटी पर कसकर सूत्र-रूप में से परिणत किए गये हैं, जो आज भी सत्य हैं।

उद्देश्य-

इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य ज्योतिष शास्त्र की वैज्ञानिकता और प्रासंगिकता को समाज के सामने उपस्थापित करना है ताकि समाज इस विषय में सार्थक गवेषणा हेतु उन्मुख हो सके। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते यह राष्ट्रीय ज्योतिष कार्यशाला आयोजित की जा रही है। जिसके विभिन्न सत्रों में ज्योतिषशास्त्र के विशेषज्ञों, शोधकार्यरत विद्वानों एवं शोधार्थी छात्रों के द्वारा इन विषयों पर परिचर्चा से लाभ उठाया जा सकता है।

संगोष्ठी का विषय –

ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता
एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

संगोष्ठी के उपविषय –

प्रस्तुत संगोष्ठी में निम्नलिखित उपविषयों पर फलित ज्योतिष और संहिता ज्योतिष के अनुसार व्यापक एवं गहन विचार-विमर्श अपेक्षित है।

१. व्यक्ति व समाज पर पड़ने वाले ग्रहों के प्रभाव का ज्योतिषीय दृष्टि से वैज्ञानिक विवेचन और वर्त्तमान समय में प्रासंगिकता।
२. आजीविका (Profession) के निर्धारण में ज्योतिष की भूमिका।
३. रोगों के निदान और समाधान में ज्योतिष-शास्त्र की भूमिका और उसकी प्रासंगिकता।
४. ज्योतिषशास्त्रीय वृष्टि-विचार की वैज्ञानिकता और प्रासंगिकता।
५. प्राकृतिक आपदाओं के फलादेश में ज्योतिष की भूमिका और उसकी प्रासंगिकता।
६. दकार्गल (ज़मीन के नीचे जल की स्थिति) के ज्ञान में ज्योतिष-शास्त्रीय सिद्धान्तों और प्रयोगों की वैज्ञानिकता और प्रासंगिकता।

इसके अतिरिक्त ज्योतिष-शास्त्र से सम्बन्धित अन्य विषय भी हो सकते हैं जो कार्यशाला के केन्द्रीय विषय को परिलक्षित करें और कार्यशाला की उपलब्धि में सार्थक भूमिका निभा सकें।

समन्वयक
प्रो. हंसधर झा
अध्यक्ष – ज्योतिष विभाग
+919479540636

सचिव
डॉ. श्यामदेव मिश्र
वरिष्ठ सहायकाचार्य – ज्योतिष विभाग
+918527186109

राष्ट्रिय-ज्योतिष-कार्यशाला

ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

(28 – 29 नवम्बर 2017 ई.)

प्रधान संरक्षक
माननीय डा. कुंवर विजय शाह
मन्त्री स्कूल शिक्षा मध्यप्रदेश शासन एवं
चेयरमैन, महर्षि पतञ्जलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

संरक्षक
श्री प्रभात राज तिवारी
निदेशक
महर्षि पतञ्जलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

प्रो. एम्. चन्द्रशेखर
अध्यक्ष – कार्यशाला एवं
प्राचार्य, रा.सं.सं. भोपाल परिसर

प्रो. हंसधर झा
समन्वयक, कार्यशाला
अध्यक्ष – ज्योतिषविभाग

डॉ. श्यामदेव मिश्र
सचिव, कार्यशाला
वरि. सहा. आचार्य – ज्योतिषविभाग

आयोजन सहयोग
श्री प्रशान्त डोलस, उप निदेशक, म.प.सं.सं., म.प्र.
डॉ. सत्यजित पाण्डेय, सहा. निदेशक, म.प.सं.सं., म.प्र.

भोजनव्यवस्था एवं यातायात व्यवस्था -	डॉ. नीलमाधब दाश	+918982744588
	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	+919555588276
मञ्चव्यवस्था -	डॉ. अवधेश श्रोत्रिय	+919907379415
	डॉ. नीलमाधब दाश	+918982744588
	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	+919555588276
समाचारसमिति -	डॉ. अवनि शर्मा	+919826767535
	डॉ. अवधेश श्रोत्रिय	+919907379415
तकनीकी सहयोग -	श्री रोहित पचौरी	

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश
एवं
राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मा.वि.वि.), भोपाल परिसर
के संयुक्त तत्त्वावधान में

राष्ट्रिय-ज्योतिष-कार्यशाला

ज्योतिषशास्त्र की वैज्ञानिकता एवं वर्तमान समय में प्रासंगिकता

28 एवं 29 नवम्बर 2017

स्थान

राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान
मानित विश्वविद्यालय, भोपाल परिसर
(Accredited by NAAC with 'A' Grade)
संस्कृत मार्ग, बाग सेवनिया, भोपाल (म.प्र.) 462043
दूरभाष – 0755- 2418043, 9752529724, +919074523891
ई-मेल- bhojrajpanchang@gmail.com